क्यों

सुसमाचार, परमेश्वर की परिपूर्णता और कष्टवहन

डॉ॰ डेविड प्लॉट

जिनके पास बाइबल है, वे अध्याय तीन खो लें पिछले अध्ययन में हमने देखा था कि अय्यूब का सर्वस्व नाश हो गया। उसका स्वाथ्य भी जाता रहा और वह रोगी अवस्था में कूड़े के ढेर पर बैठा अपने घाव सहला रहा था। तथापि वह यही कहता है, ''यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने ले लिया; यहोवा का नाम धन्य है।'' हम देखते हैं कि अय्यूब अपने कष्टों में भी परमेश्वर का परमार्थ देख रहा था। उसका यह कथन त्रासदी के प्रति उसकी प्रतिक्रिया था परन्तु इस अध्ययन में हम देखेंगे कि त्रासदी का अन्त न होने पर क्या होता है? त्रासदी के आगमन पर परमेश्वर को धन्य कहना एक बात है परन्तु त्रासदी लम्बे समय तक बनी रह तब उसे धन्य कहना सर्वथा भिन्न दृष्टिकोण है।

हम अय्यूब के साथ हमारे दो परिवारों का उदाहरण भी देखेंगे – जॉन ब्रोकॉ और ग्वेन ब्रोब्स्ट जिनका पिछले माह केंसर के कारण देहान्त हो गया। इनके परिवारों ने हमें अनुग्रहीत किया कि हम उनके अनन्त कष्टों में उनके जीवन का अवलोकन करें।

अब प्रश्न यह है कि वचन क्या कहता है? अय्यूब की पुस्तक के अभिप्राय पर ध्यान दें – कष्टों की यात्रा पर, क्षणिक कष्ट पर नहीं। अय्यूब अध्याय 3 का एक ही अर्थ पूरा उद्देश्य नहीं समझाता है। शैतान ने परमेश्वर को चुनौति दी कि अय्यूब को वंचित कर दे तो वह तुझे कोसेगा परन्तु अय्यूब उसे धन्य ही कहता है। अन्त यहां नहीं होता है। यह पूरा परिदृश्य अध्याय 2 से अध्याय 42 तक चल रहा है। हम इसी पर ध्यान देंगे। अय्यूब अध्याय 3 पूरा सुनें:

अय्युब 3:1–26.

इसके बाद अय्यूब मुंह खोलकर अपने जन्मदिन को धिक्कारने और कहने लगा, वह दिन जल जाए जिस में मैं उत्पन्न हुआ, और वह रात भी जिस में कहा गया, कि बेटे का गर्भ रहा। वह दिन अन्धियारा हो जाए ! ऊपर से ईश्वर उसकी सुधि न ले, और न उस में प्रकाश होए। अन्धियारा और मृत्यु की छाया उस पर रहे। बादल उस पर छाए रहें; और दिन को अन्धेरा कर देनेवाली चीजों उसे डराएं। घोर अन्धकार उस रात को पकड़े; वर्ष के दिनों के बीच वह आनन्द न करने पाए, और न महीनों में उसकी गिनती की जाए। सुनो, वह रात बांझ हो जाए; उस में गाने का शब्द न सुन पड़ जो लोग किसी दिन को धिक्कारते हैं, और लिब्यातान को छेड़ने में निपुण हैं, उसे धिक्कारें। उसकी संध्या के तारे प्रकाश न दें; वह उजियाले की बाट जोहे पर

वह उसे न मिले, वह भोर की पलकों को भी देखने न पाए; क्योंकि उस ने मेरी माता की कोख को बन्द न किया और कष्ट को मेरी दृष्टि से न छिपाया। मैं गर्भ ही में क्यों न मर गया? पेट से निकलते ही मेरा प्राण क्यों न छूटा? मैं घुटनों पर क्यों लिया गया? मैं छातियों को क्यों पीने पाया? ऐसा न होता तो मैं चुपचाप पड़ा रहता, मैं सोता रहता और विश्राम करता, और मैं पृथ्वी के उन राजाओं और मन्त्रियों के साथ होता जिन्हों ने अपने लिये सुनसान स्थान बनवा लिए, वा मैं उन राजकुमारों के साथ होता जिनके पास सोना था जिन्हों ने अपने घरों को चान्दी से भर लिया था; वा मैं असमय गिरे हुए गर्भ की नाई हुआ होता, वा ऐसे बच्चों के समान होता जिन्हों ने उजियाले को कभी देखा ही न हो। उस दशा में दुष्ट लोग फिर दुख नहीं देते, और थके मांदे विश्राम पाते हैं। उस में बन्धुए एक संग सुख से रहते हैं; और परिश्रम करानेवाले का शब्द नहीं सुनते। उस में छोटे बड़े सब रहते हैं, और दास अपने स्वामी से स्वतन्त्र रहता है। दुखियों को उजियाला, और उदास मनवालों को जीवन क्यों दिया जाता है? वे मृत्यु की बाट जोहते हैं पर वह आती नहीं; और गड़े हुए धन से अधिक उसकी खोज करते हैं; वे क़ब्र को पहुंचकर आनन्दित और अत्यन्त मगन होते हैं। उजियाला उस पुरुष को क्यों मिलता है जिसका मार्ग छिपा है, जिसके चारों ओर ईश्वर ने घेरा बान्ध दिया है? मुझे तो रोटी खाने की सन्ती लम्बी लम्बी सांसें आती हैं, और मेरा विलाप धारा की नाई बहता रहता है। क्योंकि जिस डरावनी बात से मैं डरता हूँ, वही मुझ पर आ पड़ती है, और जिस बात से मैं भय खाता हूँ वही मुझ पर आ जाती है। मुझे न तो चैन, न शान्ति, न विश्राम मिलता है; परन्तु दुख ही आता है।

एक अध्याय बाद हम देखेंगे कि अय्यूब अपने जन्म के दिन को कोसता है। उसके दुःख का समाचार सुनकर उसके मित्र, एलीपज, बिलदद और सोपर उसे देखने आए। वे सात दिन तक चुप रहकर कूड़े के ढेर पर उसे और उसके कष्टों को देखते रहे। अय्यूब पहली बार मुंह खोलता है। हम अध्याय 3 से अध्याय 31 का सर्वेक्षण करेंगे। अय्यूब के कहने के पश्चात् एलीपज अपने विचार व्यक्त करता है और अय्यूब अपना विवाद प्रस्तुत करता है। तदोपरान्त बिलदद अपने विचार प्रकट करता है और अय्यूब प्रतिक्रिया दिखाता है। इसके बाद सोपर अपनी बुद्धिमानी प्रकट करता है और अय्यूब प्रतिवाद में अपनी बात कहता है। इस प्रकार यहां तीन चरणों में उनका वाद–विवाद दिया गया है अन्त में एक मित्र समापन करता है। यहां एक मनुष्य है जो पूर्णरूपेण धर्मी है – वह परमेश्वर से प्रेम करता है, परमेश्वर को समर्पित है, कष्टों में परमेश्वर को धन्य कहता है, परमेश्वर का भय मानता है, बुराई से दूर रहता है वह परमेश्वर के भेद समझने का प्रयास कर रहा है। यहां मैं चाहता हूं कि हम परमेश्वर की परिपूर्णता को चार परिदृश्यों में देखें, मेरी समझ में इनका हमारे जीवन में गहरा अर्थ है, विशेष करके तब जब कष्ट महिनों, वर्षों हमें नहीं छोड़ते।

पहला, परिदृश्य, कष्टों में परमेश्वर की उपस्थिति। अध्याय 3–31 में आप देखेंगे कि अय्यूब अपने प्रत्येक विवाद में परमेश्वर की उपस्थिति का अंगीकार करता है। सच तो यह है कि वह परमश्वेर की उपस्थिति पर

सन्देह नहीं करता है। उसकी उलझन का कारण है कि परमेश्वर की उपस्थिति और परमेश्वर के गुणों के उपरान्त भी उसके साथ ऐसा हो रहा है। आप इस अध्याय में उसके प्रश्नों को रेखांकित कर लें ओर उनके प्रश्नवाचक शब्द पर ध्यान दें। पद 11, ''क्यों'' ''मैं गर्भ ही में क्यों न मर गया?'' पद 12, ''मैं घुटनों पर क्यों लिया गया?'' पद 16, ''मैं असमय गिरे हुए गर्भ के समान होता। (यहां निहितार्थ प्रश्नवाचक ही है।) पद 20, ''दुःखियों को उजियाला और उदास मनवालों को जीवन क्यों दिया जाता है?'' पद 23, ''उजियाला उस पुरुष को क्यों मिलता है जिसका मार्ग छिपा है?'' उसके कष्टों के साथ साथ यह प्रश्न ''क्यों'' बढ़ते जाते थे। हमारा अध्ययन विषय है, ''कष्टों के बढ़ने पर हमें उसका उत्तर चाहिए होता है।'' यह स्वभाविक ही है कि हम कारण खोजना चाहेंगे। परमेश्वर से पूछना, ''क्यों?'' अनुचित नहीं है। अधिक गहराई में हम अगले अध्ययन में उतरेंगे परन्तु यहां इतना ही पर्याप्त है कि हम अपने ''क्यों'' को सही परिप्रेक्ष्य में रखें। मैं आश्वस्त हूं कि इस पुस्तक का उद्देश्य हमें सिखना है कि कष्टों के मध्य हमें उसकी उपस्थिति की आवश्यकता पड़ती है।

यहां मै आपको एक तथ्य समझाना चाहता हूं। परमेश्वर हमें क्या देता है? परमेश्वर स्वयं को ही हमें दे देता है। यदि परमेश्वर के पास कष्टों और बुराईयों की व्याख्या करने का अवसर है तो वह यही पुस्तक है। यही वह समय है। अय्यूब संपूर्ण कहानी में परमेश्वर की उपस्थिति से संघर्षरत है। अध्याय 3:23, ''उजियाला उस पुरुष को क्यों मिलता है जिसकी मार्ग छिपा है?'' अय्यूब के चारों और बाड़ा किसने बांधा था? परमेश्वर ने – उसकी प्रभुता ने। अध्याय 7:17 देखें, ''मनुष्य क्या है कि तू उसे महत्त्व दे....?'' पद 18, ''और प्रति भोर को उसकी सुधि ले और प्रति क्षण उसे जांचता रहे। तू कब तक मेरी ओर आंखें लगाए रहेगा?'' वह परमेश्वर की उपस्थिति से संघर्षरत है। हम इसे आगे चलकर अधिक गहराई में देखेंगे परन्तु अभी अध्याय 42:14 सुनें, ''तूने कहा, 'मैं निवेदन करता हूं सुन, मैं कुछ कहूंगा, मैं तुझ से प्रश्न करता हूं, तु मुझे बता।''' पद 5, ''मैंने कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आंखें तुझे देखती हैं। अय्यूब की पुस्तक के उद्देश्य का एक भाग यह भी है, परमेश्वर की उपस्थिति से संघर्ष और अन्ततः कष्टों में परमेश्वर की उपस्थिति का सामर्थ्य। हम तो उत्तर खोजते हैं परन्तु परमेश्वर स्वयं को प्रकट कर देता है। आपके विचार अब भी उत्तर पाने पर केन्द्रित हैं। क्या हम वास्तव में उत्तर पाना चाहते हैं?

ज़रा सोचें। दो उदाहरण देता हूं। दो वर्ष हुए कि मैं फुटबॉल खेल रहा था। उस खेल में मेरी कलई टूट गई। मेरा भाई मुझे तुरन्त अस्पताल ले गया। वहां नर्स ने बड़ा विचित्र प्रश्न पूछा, ''कितना दर्द हो रहा है?''

मुझे अत्यधिक दर्द था। क्या उसक समय मैं यह चाहता था कि डॉक्टर आकर मुझे एक्स–रे दिखाए और मुझे कारण एवं परिस्थितियां समझाएं? नहीं, मैं केवल दर्द निवारण चाहता था। मेरी आवश्यकता बोद्धिक व्याख्या सुनने की नहीं थी।

दूसरा उदाहरण, मुझे विवाहित जीवन में बहुत कुछ सीखना है। मैंने एक बात तो सीख ली है और सीखते रहना भी है। जब हेदर किसी परेशानी या कष्ट से गुज़र रही होती है तब उसे व्याख्याओं की अपेक्षा मेरी उपस्थिति की आवश्यकता होती है।

अय्यूब की कहानी का लावण्य यह है कि परमेश्वर स्वर्ग में बैठ कर विभिन्न व्याख्याएं नहीं देता कि घटना का कारण यह है या यह है परन्तु परमेश्वर अय्यूब के साथ उपस्थित है – एक एक चरण में उसके साथ। यही सुसमाचार है। हमारा परमेश्वर दूर नहीं, हमारे साथ रहता है। वह तो हमारे सदृश्य बन गया। इब्रानियों 4 में लिखा है, ''क्योंकि हमारे पास ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी दुर्बलताओं में हमारे साथ दुःखी न हो।'' आप टूट गए हैं? वह भी तोड़ा गया था। आप का परित्याग किया गया है? उसका भी परित्याग किया गया था। आपको दुःख है? वह भी दुःखी हुआ था। क्या आप रो रहे हैं? वह भी रोया था। आप पूछेंगे, क्यों? क्रूस से उसकी वाणी सुनें, ''हे मेरे प्रभु, हे मेरे प्रभु....'' क्या? ''तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' वह हमारे कष्टों से परिचित है। आपके कष्टों में मैं आपको एक बात स्मरण कराता हूं कि परमेश्वर ने आपका त्याग नहीं किया है। वह आपके कष्टों में आपके साथ सहभागी है। अय्यूब को अपने मित्रों के तर्क के कारण अकेलेपन का बोध होता परन्तु उसका निष्कर्ष क्या है? ''मैं अकेला नहीं हूं वरन् अब तो मैं तुझे देखता हूं।'' कष्ट और दुःख रहते हुए भी परमेश्वर की उपस्थिति से हम वंचित नहीं।

दूसरा परिदृश्य – जीवन की आशिषें जिनका हम सुख भोगते हैं चली जाएं तौभी परमेश्वर भला है। शैतान ने परमेश्वर से कहा, ''अय्यूब तेरी उपासना करता है क्योंकि तू उसे उपासना की कीमत देता है। यदि तू उसे कंगाल बना दे तो वह तेरी उपासना नहीं करेगा।'' परन्तु वह कंगाल होकर भी परमेश्वर की उपासना करता है। उसकी देह को कष्ट दे तो वह तुझे कोसेगा। अय्यूब 2:10 में वह शारीरिक कष्टों के उपरान्त भी कहता है, ''क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें?'' अय्यूब शैतान से और हम से यही कहता है कि समस्त संघर्षों के उपरान्त परमेश्वर भला है। यहां आकर उसके मित्र उसे थियोलॉजी समझाते हैं। यद्यपि उनके आख्यान में अच्छी थियोलॉजी है, उनका निष्कर्ष उचित नहीं कि परमेश्वर धर्मी जन को आशिषें देता है और अधर्मी को कष्ट। अब क्योंकि अय्यूब कष्ट भोग रहा था तो उनके अनुसार अय्यूब क्या हुआ? अधर्मी। अय्यूब तूने कहीं न कहीं अनजाने में परमेश्वर का अपमान किया है। परमेश्वर से संबन्ध सुधार तो तेरे कष्ट दूर हो जाएंगे।

अब अध्याय 4 में एलीपज की बातें सुनें, ''क्या तुझे मालूम है कि कोई निर्दोष भी कभी नष्ट हुआ है? या कहीं सज्जन भी काट डालें गए? मेरे देखने में तो जो पाप को जोतते और दुःख बोते हैं, वही उसको काटते हैं। वे परमेश्वर की श्वास से नष्ट होते, और उसके क्रोध के झोंके से भस्म होते हैं।'' तूने निश्चय ही कुछ तो अनर्थ किया है। 5:17, ''देख, क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जिसको परमेश्वर ताड़ना देता है; इसलिए तू

सर्वशक्तिमान की ताड़ना को तुच्छ मत जान। क्योंकि वही घायल करता है और वही पट्टी बांधता है; वही मारता है और वही अपने हाथों से चंगा भी करता है। एलीपज के कहने का अर्थ यह है कि अय्यूब ने निश्चय ही कुछ तो किया है जो उचित नहीं। पश्चाताप कर और पाप से विमुख हो।

अध्याय 8 में बिलदद और गहराई व्यक्त करता है, ''तू कब तक ऐसी बातें करता रहेगा, और तेरे मुंह की बातें कब तब प्रचण्ड वायु सी रहेंगी? क्या परमेश्वर अन्याय करता है? और क्या सर्वशक्तिमान धर्म को उलटा करता है? पद 4, ''यदि तेरे बच्चों ने उसके विरूद्ध पाप किया है, तो उसने उनको उनके पाप का फल भुगताया है।'' आप समझे वह क्या कह रहा है? परमेश्वर ने उन्हें मार डाला क्योंकि उन्होंने पाप किया था। आंधी उसके दण्ड का साधन थी। अब वह अय्यूब से कहता है, ''तौभी यदि तू परमेश्वर को यत्न से ढूंढता और सर्वशक्तिमान से गिड़गिड़ाकर बिनती करता, और यदि तू निर्मल और धर्मी रहता, तो निश्चय वह तेरे लिए जागता और तेरी धार्मिकता का निवास ज्यों का त्यों कर देता। चाहे तेरा भाग पहले छोटा ही रहा हो, परन्तु अन्त में तेरी बहुत बढ़ती होती।'' यही परामर्श तो एलीपज ने दिया था। यदि तू परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी हो तो सब कुछ समृद्ध हो जाएगा।

अध्याय 11 में सोपर का परामर्श निहित है। संपूर्ण परिदृश्य में अय्यूब अपनी निर्दोषिता की गवाही देता है। अय्यूब अपने आप को सिद्ध मनुष्य नहीं कर रहा है परन्तु उसका कहना मात्र यह है कि उसे इन कष्टों का भोगी नहीं होना है। सोपर उसे झिड़कता है। 11:4, तू तो यह कहता है, 'मेरा सिद्धान्त शुद्ध है और मैं परमेश्वर की दृष्टि में पवित्र हूं।' परन्तु भला हो कि परमेश्वर स्वयं बातें करे और तेरे विरूद्ध मुंह खोले, और तुझ पर बुद्धि की गुप्त बातें प्रकट करें, कि उनका मर्म तेरी बुद्धि से बढ़कर हो। इसलिए जान ले कि परमेश्वर तेरे अधर्म में से बहुत कुछ भूल गया है।'' आगे पद 13 में वह वही परामर्श देता है जो हमने पहले विवादों में देखा है, ''यदि तू अपना मन शुद्ध करे, और ईश्वर की ओर अपने हाथ फैलाए, और जो कोई अनर्थ काम तुझसे होता हो उसे दूर करे, और अपने डेरों में कोई कुटिलता न रहने दे, तब तो तू निश्चय अपना मुंह निष्कलंक दिखा सकेगा; और तू स्थिर होकर कभी न डरेगा। तब तू अपना दुःख भूल जाएगा, तू उसे उस पानी के समान स्मरण करेगा जो बह गया हो।'' अय्यूब एक ही बात कहता आ रहा है कि कष्ट अधर्मी पर ही नहीं धर्मी जन पर भी आते हें। सत्य तो यह है कि अधर्मी फूलता–फलता है और धर्मी कष्ट उठाता है, ''वह तो इसी विचार में उलझा हुआ है परन्तु उसके मित्र लकीर के फकीर, एक ही बात पर अड़े हैं, ''परमेश्वर अधर्मी को कष्ट देता है ओर धर्मी जन को आशीष देता है।''

यह वास्तव में निम्न स्तर की थियोलॉजी है जो आज कथित मसीही विश्वास में प्रचलित है – परमेश्वर के पीछे चलें उसका आज्ञापालन करें तो आपका जीवन समृद्ध और सफल होगा। आप परमेश्वर में विश्वास न करें उसकी आज्ञाएं न माने तो आप दुःख उठाएंगे। मैं चाहता हूं कि आप झूठे सुसमाचार और सच्चे

सुसमाचार में अन्तर देखें। झूठे सुसमाचार में कष्टवहन परमेश्वर की अप्रसन्नता का प्रमाण है। इसमें सन्देह नहीं कि कष्ट पाप के कारण आते हैं परन्तु इसके कारण सच्चाई को विकृत न किया जाए कि सब कष्ट पाप का परिणाम हैं। यही अधिकांश मनुष्यों का मानना है। परन्तु अय्यूब ने कष्टवहन के लिए ऐसा कुछ नहीं किया था। आज टी.वी. पर यही प्रदर्शन है, ''यदि मुझ में विश्वास हो तो परमेश्वर मुझे आशिष देगा।''

मुझे इसको बोध तब हुआ जब हम एशिया के एक गांव में आवासीय कलीसिया के विश्वासियों के मध्य थे। वे मसीह की आराधना और वचन के अध्ययन के निमित्त जोखिम उठाते हैं। वहां एक महिला कुछ अंग्रेज़ी बोलना जानती थी। उसने मुझसे कहा, ''गुरुजी, मैं यदाकदा अपने टी.वी. पर अमरीका के कार्यक्रम देखती हूं। वे प्रचारक धनधान्य से समृद्ध हैं और उनके प्रचार में यही सुनने को मिलता है कि परमेश्वर में विश्वास करो तो तुम भी समृद्ध हो जाओगे। हम तो सब ग़रीब लोग हैं। क्या हमारे विश्वास में कोई कमी है?'' देखिए, हम विश्व को कैसा सुसमाचार सुना रहे हैं! हमारी समृद्धि परमेश्वर में विश्वास का परिणाम है। हमने भौतिक वस्तुओं को इतना अधिक महत्त्व दे दिया है कि वे परमेश्वर से बढ़कर हो गई हैं। यह वास्तव में मूर्ति पूजा है। यदि हमारे पास समृद्धि नहीं है तो हम परमेश्वर को दोष देते हैं, ''तू ऐसा क्यों करता है? हमारा सब कुछ क्यों चला गया? मैं कष्ट क्यों उठा रहा हूं?

झूठा सुसमाचार कष्ट को परमेश्वर की अप्रसन्नता कहता है। जबकि सच्चा सुसमाचार कष्टों को परमेश्वररूपी धन के संग्रह का साधन मानता है। यही अय्यूब सीख रहा था और हमें समझा रहा है। वह संसार को बताना चाहता है कि जब सब समाप्त हो जाए तो परमेश्वर ही अन्ततः सबसे बड़ा धन है। वह भला है। अपने जीवन के संबन्ध में इस पर विचार करें। यदि आप कष्टों में राहत खोजते हैं और यह दिखावा न करें कि कष्ट समस्या नहीं हैं तो क्या सांसारिक सुख विलास से वंचित होना कष्ट नहीं ? संभव है कि हमारी मान–मर्यादा, साथियों में हमारी प्रतिष्ठा, हमारी सफलता की कमी या इससे अधिक गहराई में कुछ हो या हमारा स्वास्थ्य–दृष्टि या हाथ पैर से विकलांग होना या कोई असाध्य रोग या किसी प्रिय की मृत्यु– मां या बाप; पति या पत्नी या बच्चा। ये सांसारिक अनुराग हम से छिन जाएं तो यह कष्ट उठाना ही है।

अब मान लो कि सबके ऊपर परमेश्वर हमारा धन है और हमारा सब कुछ चला जाता है तो हम कहां हैं? हम परमेश्वर पर आश्रित हैं। वही हमारा धन है। मैं नहीं कहता कि हानि से कष्ट उत्पन्न नहीं होता, किसी की मृत्यु से आंसू नहीं निकलते। गतसमनी की वाटिका में यीशु के आंसू गिरे थे। यहां कहने का अर्थ यह है कि इस संसार की सर्वोत्तम वस्तु भी चली जाए तो भी मैं परमेश्वर में अपने धन की ओर बढ़ने को बाध्य हूं। यही कारण है कि पौलुस ने फिलिप्पियों की कलीसिया को लिखा, ''मेरे लिए जीवित रहना मसीह है और मर जाना लाभ।'' (1:21) संपूर्ण विनाश लाभ है। क्यों? क्योंकि अब आपके पास केवल परमेश्वर ही है।

इसी कारण पौलुस कहता है, ''जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूं, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है।'' (पद 23) सब कुछ चला जाए तौभी परमेश्वर भला है। यही अय्यूब का विश्वास था, ''वह मुझे घात करेगा, मुझे कुछ आशा नहीं; तौभी मैं अपनी चाल चलन का पक्ष लूंगा।'' सब कुछ चला जाने पर भी परमेश्वर परिपूर्ण है। वह जीवित है, वह भला है। यह हमारे विचारों से कितना भिन्न है!

तीसरा परिप्रेक्ष्य – हमारी परिस्थितियों की जटिलता में परमेश्वर सर्वज्ञानी है। अय्यूब अध्याय 28 : अय्यूब ज्ञान काव्यों की पुस्तक है। अय्यूब 28:12 इस पुस्तक का मुख्य पद है। यह बुद्धि के मूल्य और बुद्धि एवं परमेश्वर में संबन्ध प्रकट करता है।

अय्यूब 28:12–28 परन्तु बुद्धि कहां मिल सकती है? और समझ का स्थान कहां है? उसका मोल मनुष्य को मालूम नहीं, जीवनलोक में वह कहीं नहीं मिलती! अथाह सागर कहता है, वह मुझ में नहीं है, और समुद्र भी कहता है, वह मेरे पास नहीं है। चोखे सोने से वह मोल लिया नहीं जाता। और न उसके दाम के लिये चान्दी तौली जाती है। न तो उसके साथ ओपीर के कुन्दन की बराबरी हो सकती है; और न अनमोल सुलैमानी पत्थर वा नीलमणि की। न सोना, न कांच उसके बराबर ठहर सकता है, कुन्दन के गहने के बदले भी वह नहीं मिलती। मूंगे उौर स्फटिकमणि की उसके आगे क्या चर्चा! बुद्धि का मोल माणिक से भी अधिक है। कूश देश के पद्मराग उसके तुल्य नहीं ठहर सकते; और न उस से चोखे कुन्दन की बराबरी हो सकती है। फिर बुद्वि कहां मिल सकती है? और समझ का स्थान कहां? वह सब प्राणियों की आंखों से छिपी है, और आकाश के पक्षियों के देखने में नहीं आती। विनाश ओर मृत्यु कहती हैं, कि हमने उसकी चर्चा सुनी है।

पद 23 – यहां विरोधाभास है परन्तु कोई उसे पा नहीं सकता।

''तब उसने बुद्धि को देखकर उसका बखान भी किया, और उसको सिद्ध करके उसका पूरा भेद जान लिया। तब उसने मनुष्य से कहा, 'देख, प्रभु का भय मानना यही बुद्धि हैः और बुराई से दूर रहना यही समझ है।''

कहने का अर्थ यह है कि बुद्धि एक अनमोल रत्न है वह परमेश्वर के अतिरिक्त किसी की प्राप्ति में नहीं है। केवल वही जानता है कि उसका वास कहां है। मैं चाहता हूं कि हम इस पर विचार करें। बुद्धि के तीन पक्ष। पहला उसका ज्ञानः केवल परमेश्वर जानता है कि उसका वास कहां है। दूसराः उसका परिदृश्यः केवल परमेश्वर उसे पृथ्वी के छोर से देख सकता है। तीसरा, बुद्धि का अनुभवः परमेश्वर ने सृष्टि को रचा। उसने बुद्धि का बखान किया, उसे सिद्ध किया, उसकी परख की। अतः मनुष्य की सीमित बुद्धि की तुलना परमेश्वर की असीम बुद्धि से करके देखें, तब हम उसे कष्टों से प्रासंगिक बनाएंगे।

हम में बुद्धि की कमी क्यों होती है? क्योंकि हम कहीं न कहीं इन तीन बातों से चूकते हैं। सबसे पहले, हम में ज्ञान की कमी होती है। जब कोई अविवेकी निर्णय लेता है तो प्रायः उसे तथ्यों के ज्ञान का अभाव होता है। आपके साथ भी ऐसा ही होता होगा कि निर्णय लेने के बाद किसी तथ्य का ज्ञान होने पर आप सोचते हैं, ''काश मुझे यह पहले मालूम होता तो मैं ऐसा निर्णय नहीं लेता।''हम में ज्ञान की कमी है। हम सब अवयवों से अवगत नहीं होते हैं। दूसरा, हमें परिदृश्य का ज्ञान नहीं होता है। हम नहीं समझ पाते कि अन्य जन इस निर्णय को क्या समझेंगे। हम सबके विचारों को नहीं जानते हैं। हम बुद्धिमानी के निर्णय हेतु परिदृश्यों से अनजान रहते हैं। तीसरा, हम में अनुभव की कमी होती है। हम जानते हैं कि किसी क्षेत्र में अनुभव होने से निर्णय बुद्धिमानी का होता है। जब आपको कोई पहला अनुभव होता है तो आप नहीं जानते कि क्या करें परन्तु बार–बार उसी अनुभव के कारण आप अधिक बुद्धिमान बन जाते हैं। कहने का अर्थ यह है कि अनुभव बुद्धिमान बनाता है। अतः हमारी बुद्धि की कमी का कारण है ज्ञान की कमी, परिदृश्य की कमी और अनुभव की कमी। हम में सबसे कुशल व्यक्ति को भी इन क्षेत्रों में कमी का बोध होता है।

अब इसकी तुलना परमेश्वर की असीम बुद्धि से करें। उसके ज्ञान के विषय क्या कहें? परमेश्वर का ज्ञान सिद्ध है। परमेश्वर के पास सब तथ्य है। परमेश्वर निर्णय लेने के बाद जानकारी ग्रहण नहीं करता है। वह कभी नहीं कहता, ''मुझे मालूम होता तो मैं ऐसा नहीं करता।'' उसके लिए कोई जानकारी नई नहीं है। आप उसे कोई ऐसी बात नहीं बता सकते जो उसने सोची न हो। उसका ज्ञान सिद्ध है। दूसरा उसका परिदृश्य अनन्तकालीन है। वह आकाश के नीचे सब कुछ देख सकता है। वह समय से परे अनन्तकाल देखता है। तीसरा, उसका अनुभव अन्तहीन है। वह हवा की गति निर्धारित करता है और पानी की राह जानता है। वह वर्षा को आज्ञा देता है और आंधी–तूफान का मार्ग निर्धारित करता है। उसने सृष्टि की रचना की और सिद्ध बुद्धि से उसका नियंत्रण करता है। बुद्धि और अनुभव के विषय वह धोखा नहीं खाता है।

अब इसे कष्टों में परमेश्वर की परिपूर्णता के साथ संयोजित करें। अब प्रश्न यह है, हम अनन्त अन्धकार में परमेश्वर पर भरोसा कैसे करें? आप उस पर भरोसा तभी कर सकते हैं जब आपको यह विश्वास हो कि उसका ज्ञान सिद्ध है, वह सब कुछ जानता है, वह हर एक परिस्थिति और एक–एक घटक को जानता है। उसका परिदृश्य अनन्त है। वह जानता है कि किसी के अनन्त जीवन के लिए क्या उचित है। उसके पास अनन्त अनुभव है। लूका 11:11–13 में व्यक्त है कि पिता, परमेश्वर अपनी सन्तान को भली वस्तुंए देता है। परमेश्वर की बुद्धि हमें चिताती है कि वह हमारे लिए सर्वोत्तम वस्तुएं देता है, यदि आपको सन्देश मिले कि आपका कोई अति प्रिय जन मर गया है तो आप रोने लगेंगे परन्तु आपके मन में एक विश्वास है कि परमेश्वर जानता है कि उचित क्या है जिसे मैं नहीं जानता। हम तो परिस्थितियों में उलझ कर रह जाते हैं परन्तु परमेश्वर बुद्धिमान है। यही सुसमाचार है। 1 कुरिन्थियों 1 में परमेश्वर की बुद्धि और मनुष्य की मूर्खता का उल्लेख है। उसने अपने पुत्र को क्रूस पर क्यों चढ़ाया? इसमें बुद्धिमानी नहीं है। क्योंकि उसे हममें से

प्रत्येक के पापों का पूरा ज्ञान है। उसका परिदृश्य अनन्तकालीन है। वह जानता था कि 2000 वर्ष पश्चात् आप और मैं उसकी आराधना करेंगे क्योंकि हमें पापों से छुटकारा मिलेगा। उसका अनुभव अचूक है। उसने हमें अपने आप से मिलाने के लिए उद्धार की योजना बनाई है। उसकी महान् बुद्धि के लिए उसका महिमान्वन हो।

टोज़र का यह सर्वोत्तम कथन मुझे बहुत पसन्द है, ''हमारे सर्वोपरी कल्याण की इच्छा के निमित्त परमेश्वर की भलाई, उसकी योजना के लिए परमेश्वर की बुद्धि, उसकी उपलब्धि के लिए परमेश्वर का सामर्थ्य के साथ हमें और क्या कमी है?'' परमेश्वर अत्यन्त बुद्धिमान है और हम उसका सम्मान करते हैं जब हम अंधकार में उस पर भरोसा रखते हैं। वही एकमात्र बुद्धि का भण्डार है। हमारी जटिल परिस्थितियों में वह बुद्धिमान है। वह सदासहाय है, वह भला है, वह बुद्धिमान है। यह उसकी परिपूर्णता की व्याख्या है जो हमें इस परिदृश्य में ले चलती है। हमारी निराशा में वह हमारी आशा है। परमेश्वर हमारी आशा है।

आइए एक बार फिर अध्याय 3 में अय्यूब और उसके मित्रों का वाद–विवाद सुनें जिसमें, मैं चाहता हूं, कि आप अय्यूब की निराशा पर ध्यान दें। 3:11 – ''मैं गर्भ ही में क्यों न मर गया?'' उसकी निराशा बढ़ती जाती है। 6:8 – ''भला होता कि मुझे मुंह मांगा वर मिलता और जिस बात की मैं आशा करता हूं वह परमेश्वर मुझे दे देता, कि परमेश्वर प्रसन्न होकर मुझे कुचल देता और हाथ बढ़ाकर मुझे काट डालता। यही मेरी शान्ति का कारण होता; वरन् भारी पीड़ा में भी मैं इस कारण से उछल पड़ता; क्योंकि मैंने उस पवित्र के वचनों का कभी इन्कार नहीं किया।'' 7:13 – ''जब जब मैं सोचता हूं कि मुझे खाट पर शान्ति मिलेगी, और बिछौने पर मेरा खेद कुछ कम होगा, तब तब तू स्वप्नों में मुझे घबरा देता, और दर्शनों से भयभीत कर देता है। ''इसे सुनें'', यहां तक कि मेरा प्राण फांसी को और जीवन से मृत्यु को अधिक चाहता है। मुझे अपने जीवन से घृणा आती है; मैं सर्वदा जीवित रहना नहीं चाहता। मेरा जीवन सांस सा है, इसलिए मुझे छोड़ दे।''

क्या आपको कभी ऐसा अनुभव हुआ है कि जीवन का कोई अर्थ ही नहीं रहा हो। अय्यूब ने कहा, ''मैं सर्वदा जीवित रहना नहीं चाहता। अध्याय 10 में देखें वह मर जाने की कामना करता है। 10:20, ''क्या मेरे दिन थोड़े नहीं? मुझे छोड़ दे, और मेरी ओर से मुंह फेर ले, कि मेरा मन थोड़ा शान्त हो जाए। इससे पहले कि वहां जाऊं जहां से, जहां से फिर न लौटूंगा, अर्थात् अन्धियारे और घोर अन्धकार के देश में, जहां अंधकार ही अंधकार है। 14:13 – ''भला होता कि तू मुझे अधोलोक में छिपा लेता और जब तक तेरा कोप ठंडा न हो जाए तब तक मुझे छिपाए रखता, और मेरे लिए समय नियुक्त करके मेरी सुधि लेता। 16:22 – ''क्योंकि थोड़े ही वर्षों के बीतने पर मैं उस मार्ग से चला जाऊंगा, जिससे मैं फिर वापिस न लौटूंगा।'' 17:1 ''मेरा प्राण निकलने पर है, मेरे दिन पूरे हो चुके हैं; मेरे लिए कब्र तैयार है। निश्चय जो मेरे संग है वे ठट्ठा

करने वाले हैं, उनका झगड़ा–रगड़ा मुझे लगातार दिखाई देता है।'' 17:13, '' यदि मेरी आशा यह हो कि अधोलोक मेरा धाम होगा, यदि मैंने अन्धियारे में अपना बिछौना बिछा लिया है, यदि मैंने सड़ाहट से कहा, 'तू मेरा पिता है', और कीड़े से कि, 'तु मेरी मा', और 'मेरी बहिन है', तो मेरी आशा कहां रही? मेरी आशा किसके देखने में आएगी? क्या वह अधोलोक में उतर जाएगी? क्या उस समेत मुझे भी मिट्टी में विश्राम मिलेगा?'' क्या आप अय्यूब के जीवन में बढ़ती निराशा देख रहे हैं?

यह निराशा की अति है जो अध्याय 19 में अपनी चरम सीमा तक पहुंच जाती है। देखिए 19:13 जहां वह इसका सार प्रस्तुत करता है।

अय्यूब 19:13–22 उस ने मेरे भाइयों को मुझ से दूर किया है, और जो मेरी जान पहचान के थे, वे बिलकुल अनजान हो गए हैं। मेरे कुटुंबी मुझे छोड़ गए हैं, और जो मुझे जानते थे वह मुझे भूल गए हैं। जो मेरे घर में रहा करते थे, वे, वरन मेरी दासियां भी मुझे अनजाना गिनने लगीं हैं; उनकी दृष्टि में मैं परदेशी हो गया हूँ। जब मैं अपने दास को बुलाता हूँ, तब वह नहीं बोलता; मुझे उस से गिड़गिड़ाना पड़ता है। मेरी सांस मेरी स्त्राी को और मेरी गन्ध मेरे भाइयों की दृष्टि में घिनौनी लगती है। लड़के भी मुझे तुच्छ जानते हैं; और जब मैं उठने लगता, तब वे मेरे विरुद्व बोलते हैं। मेरे सब परम मित्रा मुझ से द्वेष रखते हैं, और जिन से मैं ने प्रेम किया सो पलटकर मेरे विरोधी हो गए हैं। मेरी खाल और मांस मेरी हड्डियों से सट गए हैं, और मैं बाल बाल बच गया हूं। हे मेरे मित्रो! मुझ पर दया करो, दया, क्योंकि ईश्वर ने मुझे मारा है। तुम ईश्वर की नाई क्यों मेरे पीछे पड़े हो? और मेरे मांस से क्यों तृप्त नहीं हुए?

यह निराशा की चरम–सीमा है। मेरे शुभचिन्तक मेरे मांस के भूखे हो गए हैं, निराशा ही निराशा!

यहा ध्यान दें, निराशा की चरम सीमा पर पहुंच कर वह आशा के लिए पुकार रहा है। मैं चाहता हूं कि आप उसकी पुकार सुनें। यह अय्यूब की पुस्तक का सबसे अधिक आकर्षक अंश है। ''भला होता, कि मेरी बातें लिखी जातीं; भला होता कि वे पुस्तक में लिखी जातीं, और लोहे की टांकी और सीसे से वे सदा के लिए चट्टान पर खोदी जातीं। मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा, और अपनी खाल के इस प्रकार नष्ट हो जाने के बाद भी मैं शरीर में होकर परमेश्वर का दर्शन पाऊंगा। उसका दर्शन मैं आप अपनी आंखों से अपने लिए करूंगा, और कोई दूसरा नहीं। यद्यपि मेरा ह्रदय अन्दर ही अन्दर चूर–चूर भी हो जाए,'' अय्यूब यहां ''छुड़ानेवाला'' शब्द काम में ले रहा है जो रूत की पुस्तक में शोषित वर्ग के मोक्षक के लिए काम में लिया गया है। नीतिवचन में यह शब्द दुर्बल के रक्षक के लिए काम में लिया गया है। निर्गमन में दासों के मुक्तिदाता के लिए काम में लिया गया है। आगे वह कहता है कि वह उसे अपनी आंखों से देखेगा। अपने शरीर में होकर उसका दर्शन पाएगा। सब रोग समाप्त हो जाएंगे जब खाल नष्ट हो जाएगी। अय्यूब निराशा के गहन अन्धकार में भी एक ही आशा रखता

है – प्रभु का दर्शन। यह द्विमुखी है। मैं इसे परमेश्वर की परिपूर्णता और कष्टों के साथ प्रासंगिक बनाना चाहता हूं।

उसकी आशा दोहरी है। परमेश्वर हमारी देह की रोगमुक्ति प्रदान करेगा। अय्यूब का विश्वास था कि उसकी देह नई होगी। वह एक दिन परमेश्वर को देखेगा। हम भी यह जानते हैं। यही सुसमाचार है। यीशु ने क्रूस पर जान दी, फिर भी उठा। उसकी देह पुनरुत्थान की देह थी। यही पौलुस रोमियों की कलीसिया को लिखता है – देखें रोमियों 8:23 से आगे। हम जानते है कि हमारे यहां के कष्ट हमारी भावी महिमा की तुलना में कुछ भी नहीं है। सृष्टि परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की उत्सुकता से प्रतीक्षा करती है। सृष्टि जच्चा की पीड़ा सी पुकार करती है। हम पुत्र होने के लेपालकपन के लिए उन्हें भरते हैं अर्थात् अपनी देह की मुक्ति की। परमेश्वर हमें देह मुक्ति प्रदान करता है। परमेश्वर द्वारा रोगमुक्ति पर आज अत्यधिक वाद–विवाद होता है। एक प्रश्न पूछा जाता है, ''क्या परमेश्वर केंसर से चंगाई दे सकता है? निःसन्देह, ऐसा कोई केंसर नहीं जिसको परमेश्वर चंगाई न दे। परमेश्वर के लिए कोई रोग बड़ा नहीं है। उससे प्रार्थना करें परन्तु एलीपज, बिलदद और सोपर की शिक्षानुसार नहीं कि आप अपने जीवन में पाप का निवारण करें। यह झूठा सुसमाचार है। अय्यूब की पुस्तक में जो सच्चाई प्रकट है वह है, परमेश्वर के आज्ञापालन में एकनिष्ठ बने रहें और सत्य तो यह है कि इस जीवन में आपको चंगाई न मिले। तो इसका अर्थ क्या यह है कि परमेश्वर आपके जीवन में अपना सामर्थ्य प्रकट करना नहीं चाहता है? ऐसा नहीं है क्योंकि अय्यूब 3–31 में हम देखते हैं कि दुःख और कष्टों में, घोर निराशा में भी आपके पास आशा है और एक ऐसा ईश्वरीय सामर्थ्य है जो मेरे विचार में इस जीवन में रोगमुक्ति से कहीं अधिक प्रभावशाली है और हमें यह कहने योग्य बनाता है, वह मुझे काट दे तौभी मैं उस पर विश्वास करूंगा।''

आज एक तकनीकी शब्दावली है, ''केंसर उत्तरजीवी'' अर्थात् आप केंसर में भी जीवित हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि आप जयवन्त है परन्तु यह कि केंसर में जीवित रहकर यदि आप परमेश्वर में विश्वास न कर पाएं तो आप पराजित हैं। यही जॉन ब्रोकॉ और ग्वेन ब्रोब्स्ट ने किया। जब उन्हें पता चला कि उन्हें घातक केंसर है तब उन्होंने कहा, 'मेरी आशा परमेश्वर है,'' जब वे रसायनिक उपचार के कष्ट से गुज़रते थे तब वे कहते थे, ''परमेश्वर मेरी आशा है।'' जब उन्हें अपने निदान की निराशाजनक रिपोर्ट मिलती थी तब वे कहते थे, ''मेरी आशा परमेश्वर में है,'' उनके अन्तिम दिन जब मैं ने उनसे भेंट की तब कष्टों के मध्य उनके मुंह से यही शब्द निकले, ''मेरी आशा परमेश्वर में है।'' आप जानते हैं कि अन्तिम सांस लेते लेते उन्होंने क्या कहा, ''मेरी आशा परमेश्वर में है।'' वे यीशु के स्वरूप में बदल गए। उन्होंने कहा, ''मैं जानता हूं कि मेरा मुक्तिदाता जीवित है और मैं उसके साथ पृथ्वी पर खड़ा हूं। मेरी खाल के नष्ट हो जाने के बाद भी मैं उसे अपनी आंखों से देखूंगा, और कोई दूसरा नहीं। मेरा मन इसके लिए कैसा ललकता था।'' कष्टों

में रहकर परमेश्वर की परिपूर्णता को देखना है। वह अनन्तकालीन चंगाई देता है। याह की स्तुति करो। यह हमारी आशा है, वह हमारी देह को रोगमुक्त करेगा और हम उसका चेहरा देखेंगे।

यह प्रकाशित वाक्य 22:4 का पूर्वचित्रण है। मैं चाहता हूं कि आप इसे रेखांकित कर लें, ''वे उसका मुंह देखेंगे।'' यही आशा लिए हम सुबह जागते है। इसी आशा के साथ रात में हम सोते हैं। अस्पताल के बिस्तर पर भी यही आशा हमारे साथ होती है। यही आशा हमें कष्टों के मध्य लिए चलती है। एक दिन मैं उसका मुंह देखूंगा – उसकी संपूर्णता में। घोर निराशा में वह हमारी आशा है।